आत्मा मनुश्य की खेवनहारः आचार्यश्री महाश्रमण

चारभुजा में महाश्रमण विहार का लोकार्पण, मेवाड अंचल से उमडा श्रावक समाज

चारभुजाः 12 फरवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने आत्मा को मनुश्य की खेवनहार के रुप में परिभाशित करते हुए कहा कि इसकी निर्मलता बनी रहे। इसके लिए आव-यक है कि वह अपने जीवन में संयम के प्रति जागरुक रहें। आचार्यश्री ने उक्त विचार रविवार को यहां महाश्रमण विहार में मेवाड अंचल से आए हजारों लोगों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि संसार एक सागर है और जीवन नैया को पार लगाने में मनुश्य को अहिंसा के प्रति जागरुकता रखनी होगी। विनय ऐसा गुण है, जिससे जीवन में निर्मलता का विकास और अहंकार का ना-ा होता है। मनुश्यों से विनय की आराधना का महत्व बताते हुए कहा कि अहंकारी व्यक्ति अपने विनय धर्म का ना-ा कर देता है तो उसे जनमानस में सम्मान की दृश्टि से नहीं देखा जाता।

उन्होंने गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत आंदोलन को परिभाशित करते हुए कहा कि अणुव्रत के जीवन में आने से व्यक्ति के जीवन में संयम आ जाता है। यह एक ऐसा आंदोलन है, जिसके माध्यम से हम समाज का सर्वागीन विकास करने की कल्पना को साकार कर सकते है। हमारा जीवन व्यसन मुक्त और चारित्रिक दृष्टि से अनुकूल होकर प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त हो सकता है। व्यक्ति को अपना जीवन सदैव संयम के प्रति सजग रखने की आवश्यकता है। इससे स्वयं और समाज का विकास होगा और देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

आचार्यश्री ने कहा कि जिस मनुष्य में राग और द्वेष की भावना नहीं है उसे स्थिर चित्त की प्राप्ति होती है और जो राग-द्वेष से परिपूर्ण होता है उसे स्थिर की चित्त का आभास नहीं होता। व्यक्ति अपने स्वरूप का अनुसंधान करता है उसे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। भक्ति मन में व्याप्त अनेक प्रकार के विकारों को दूर करने का सशक्त माध्यम है। जीवन का मूल अर्थ साधना है। हमारा जीवन संयमित है तो हम आत्मा की अनुभूति को प्राप्त कर सकते है। व्यक्ति के जीवन में संयम, क्रोध पर नियंत्रण और अहंकार की भावना नहीं है तो हम अनेक समस्याओं का बखूबी सामना कर सकते है। आचार्य तुलसी ने इसी भूमि पर जन्म लिया। गुरुदेव ने देश में चरित्र निर्माण के लिए सबका ध्यान आत्कृष्ट करने के लिए अणुव्रत आंदोलन से देशभर में लंबी पदयात्राएं की और नैतिकता का संदेश आमजन को देने का प्रयास किया।

मेवाडी घाटियों में पदयात्रा कर ईमानदारी का संदे-ा देने वाले :ाांतिदूत ने कहा कि देश में जिस तरह से भ्रश्टाचार फैला है। यह अच्छा नहीं है। भ्रश्टाचार केवल राजनेताओं में है यह नहीं है। इससे जनता भी अछूती नहीं है। जिसे जितना अवसर मिलता है उतना वह भ्रश्टाचार करने से नहीं चुकता है, जिस देश से दूसरे मुल्क चरित्र की शिक्षा लेते थे। सीख लेते थे। आज उसी देश में चरित्र हनन हो रहा है। भ्रश्टाचार

शिष्टाचार बन रहा है। आज आवश्यक है नैतिकता, प्रामाणिकता के प्रति निष्ठा जगे। जब ईमानदारी के प्रति आस्था होगी तो छोटे मोटे आकर्षण के प्रति मन विचलित नहीं होगा।

उन्होंने अभाव को अपराध का कारण बताते हुए कहा कि इससे भी बडा कारण है आवे-ा में आकर अपनापन भूल जाना। पिता-पुत्र, पति-पत्नी आदि से झगडा करना और हत्या करना भी आवे-ा की ही परिणति है। प्रेक्षाध्यान में उल्लेख मिलता है कि अज्ञानी व्यक्ति हिंसा में जा सकता है। काम और क्रोध की वृति से भी व्यक्ति में हिंसा का प्रादुर्भाव होता है।

इससे पूर्व सुबह करीब सवा ग्यारह बजे आचार्यश्री के अपनी धवल सेना के साथ चारभुजा पहुंचने पर ग्रामीणों ने गर्मजो-ाी से स्वागत किया। इसके उपरांत आचार्यश्री के सान्निध्य में कि-ानलाल मादरेचा ने महाश्रमण विहार का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर कुंभलगढ विधायक गणे-ासिंह परमार, चारभुजा तेरापंथ अध्यक्ष ललित चोरडिया, सभा मंत्री नरेन्द्र पटवारी, मित्र मंडल मुंबई के मंत्री पारस सिंघवी, युवा गौरव महेन्द्र कोठारी, उपप्रमुख मदन गुर्जर, कुंभलगढ की पूर्व प्रधान कमला जो-ाी, पारसमल पटवारी, महंत नारायणदास, हेमराज सिंघवी, तनसुख चोरडिया आदि ने विचार व्यक्त किए।